International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

इक्कीसवीं सदी की कहानियों में दलित वर्ग एवं दलित नारी-अस्मिता की स्थापना का प्रयास

डॉ. निमिता वालिया

सहायक आचार्य हिंदी विभाग,

डॉ.भीमराव अम्बेडकर महाविद्यालय,नोहर

जिला- हनुमानगढ़(राजस्थान)

शोध सारांश-

रंग-रूप पर आधारित व्यवस्था एक प्रक्रिया थी, जिसका प्रयोग उच्च वर्ग के हितों को सुरक्षित रखना था। जिसका सामाजिक प्रभाव पडा़। समाज में असमानता पूर्वक विभाजन से निम्न वर्ग के उत्पीड़न-शोषण का कार्य प्रारंभ हो गया, जिसे मध्यकाल में कर्मचक्र और संसार चक्र के नाम से जाना गया। इसके कारण किसी के बारे में सोचना कर्म अर्थात् करने से अलग हो गया। शारीरिक मेहनत करने वाले को गरीब, निम्न वर्ग, असम्माननीय एवं शूद्र माना जाने लगा। मानसिक श्रम करने वाले को सबसे अच्छा, श्रेष्ठ एवं पूजनीय माना जाने लगा। क्योंकि शारीरिक मेहनत को जाँचने परखने वाला यही था। इसलिए मानसिक श्रम करने वाले ब्राह्मण तथा क्षत्रियों में ज्ञान, मानव, जन-चेतना, आत्मा, समाधि, रस-भोग को ही सर्वोपरि माना गया। इस प्रकार की विचारधारा प्रधान व्यवस्था बनी।

मूल भाब्द :असम्माननीय शूद्र, उत्पीड़न, कर्मचक्र और संसार चक्र, स्तम्भाभिलेख, आदर्शवादी अध्यात्मवाद।

प्रस्तावना :

इतिहास पर नजर डाली जाए तो मेहनत करने वाले शूद्रों, किसान व मेहनती लोगों की सोच समाज में अपना स्थान नहीं बना सकी। यही आदर्शवादी अध्यात्मवाद का सार है। "वर्ग-विभाजित समाज में शासक वर्ग हमेशा अवकाश भोगी वर्ग रहा है। अतः यह ब्रह्मानन्द, रसानन्द, विषयानंद की साधना एक साथ करता रहा। अतः व्यक्तिगत सम्पत्ति के साथ शोषण और चिन्तन के साथ अवकाश का जुड़ जाना एक ऐतिहासिक प्रक्रिया रही है।"1

इसका अर्थ है कि वर्षों पूर्व से ही धर्म, कर्म व सम्पत्ति को लेकर विभाजन हो गया था। यह विभाजन उच्च वर्ग द्वारा निम्न वर्ग का शोषण करना और अपने विशेष अधिकार को सुरक्षित रखने का एक नाजायज तरीका था, जिसने धोखे से निम्न वर्ग के अधिकारों को समाप्त कर दिया।

प्राचीन भारतीय व्यवस्था धर्म आधारित थी। धर्म ही केंद्र बिंदु था जिसके आधार पर कार्यों का मूल्याकन और न्याय किया जाता था। धर्म के कारण ही राज्य के समर्थन से देवत्व का स्थान मिला। समुद्रगुप्त का उल्लेख इलाहाबाद के स्तम्भाभिलेख में चारों दिगपालों, कुबेर, वरूण, इंद्र और यम की बराबरी में किया गया है। धर्म को ईश्वर का

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

स्थान दिया गया। जो इस दुनिया के पतन का कारण है। प्राचीनकाल में धर्म के पालन का अर्थ, रंग-रूप पर निर्धारित कर्म अर्थात् कार्य को करने वाला ही धर्म था। प्राचीनकाल में ब्राह्मण केवल राजगुरू ही नहीं अपितु प्रशासन का प्रमुख अंग होता था। धर्मकेन्द्र बिंदु के कारण राज्य का प्रशासन उसी पर निर्भर था। हमें पता है कि हमारे समाज के दर्शनिक और विचारक ऊँच वर्ग से संबंध रखते थे। जिसके कारण उन्हें निम्न वर्ग के विषय में सोचने और परखने का समय नहीं मिल पाया। इसी सोच का परिणाम धर्म संबंधी दर्शन है। इस प्रकार उनकी सोच वर्गहित के साधन का कारण बनी है। कर्म मूल के सिद्धान्त ही जातिगत भावना को व्यक्त करने का साधन बने है। इस तरह इनका दर्शन स्वाभाविक रूप से अपने वर्गहित के साधन का माध्यम बनकर आया। जातिगत भावना को कायम रखने के लिए प्राचीन काल के कर्म-सिद्धान्त को भी धार्मिक पवित्रता प्रदान करने के लिए इस्तेमाल किया गया। सामन्तवाद के अन्तर्गत कर्म और कर्म मूल के विश्वास ने और भी गहरी जडें जमा लीं।"2

"इस कर्म मूल के भोग की मान्यता ने भारतीय समाज में निम्न वर्णों के शोषण को औचित्य ही नहीं प्रदान किया,बल्कि विद्रोही चेतना को हमेशा कुंठित किया और भाग्यवाद को प्रश्रय दिया।"3

जबकि धर्म प्रारंभ में सामाजिक व्यवस्था का आधार था। परंतु बाद में इसे दिखाई न देने वाली शक्ति ब्रह्म से मान लिया गया, परन्तु जब धर्म के नाम पर धोखाधड़ी, झूठ, पाखण्ड, अंधविश्वास का अपने स्वार्थ के लिए प्रयोग किया जाने लगा तब उनके विरोध में आन्दोलन हुए। बौद्ध धर्म ने वर्ग विशेष को नकार कर अपने धर्म में शूद्र, अछूत, दास व स्त्री वर्ग को शरण दी। सन्तों का धार्मिक आन्दोलन जो मध्यकाल में चलाया गया। उसका एकमात्र उद्देश्य समाज में मानवतावादी व्यवस्था स्थापित करना था। धर्म के नाम पर धोखाधड़ी विषय पर राधा कृष्ण जैसे धर्मनिष्ठ लोगों को कहना पड़ा कि धर्म के दुरूपयोग के कारण हमें बहुत क्षति उठानी पड़ी है, यद्यपि वे उच्च स्वर में घोषित करते रहे हैं कि नर की सेवा ही नारायण की सेवा है, लेकिन हम ऐसे मतों और ऐसी प्रथाओं को वहन करते आ रहें है, जो असामाजिक है।"4

धर्म का गलत कार्यों के लिए प्रयोग के विषय में कार्लमार्क्स ने इसे 'नीम की गोली' तथा विद्रोह का निकास द्वार कहा है",जो व्यक्ति को आत्म-सन्तोषी और भाग्यवादी बनाकर उसके विद्रोह की क्षमता को नष्ट कर देता है। वह अपनी वर्तमान अवस्था को पूर्व-जन्म का फल मान बैठता है और अगले जन्म के भय से वर्तमान में चुप बैठा रहता है। हिन्दू धर्म सामंतवाद की जरूरतों को उसी प्रकार अभिव्यक्त करता था, जिस प्रकार प्राचीन ब्राह्मणवाद उदयमान दास-प्रथा की आवश्यकताओं को अभिव्यक्त करता था।"5

डॉ. अम्बेडकर ने सबसे पहले 'अछूत' कहे जाने वाले पद-दलितों को शिक्षित बनो, संगठित हो, संघर्ष करके पूंजीवाद की समाप्ति का नारा दिया और उनकी मानवीय गरिमा सम्मान को स्थापित करने का प्रयत्न किया। इसी कारण डॉ अम्बेडकर निम्न वर्ग के मसीहा के रूप में उभरे। उन्होंने ही संविधान में सबसे पहले निम्न वर्ग के लोगों के राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक अधिकारों की माँग की। उन्होंने अपने संघर्षों से इसे सामाजिक दृष्टि से मान्यता भी दिलाई। डॉअम्बेडकर ने भारत की सामाजिक परिस्थितियों

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

का गहरा अध्ययन करके, उसका सार प्राप्त किया, जो पूरी तरह से तर्कसंगत है। डॉ भीमराव अंबेडकर के अनुसार जब तक जातिवाद समाप्त नहीं होगा हमारा राष्ट्र उन्नति नहीं कर सकेगा। ब्राह्मणवाद से उनका अर्थ है–"इसके साथ विवाह मत करों की प्रस्तुत सम्पन्न व्यक्ति के साथ खाओ मत। प्रस्तुत सम्पन्न व्यक्ति एवं शक्ति के ब्राह्मणवाद से मुक्ति के जनतांत्रिक समाजवादी समाज की संरचना का स्वप्न ही समाज–वैज्ञानिक डॉ भीमराव अम्बेडकर ने संजोया था, जिसकी साकार परणिति दलित–साहित्य की सामाजिक आर्थिक शक्ति की सृजनात्मक क्रांति चेतना से ही सम्भव है।"6

'शिवराज सिंह' बेचैन की कहानी 'रावण' में भी निम्न वर्ग के मान सम्मान को रौंद डालती है। उसमें भी ऊंच–नीच अछूत जातिगत भेदभाव किया जाता है। इस कहानी का नायक 'मूल सिंह' गांव में हो रही रामलीला में रावण का किरदार निभाता है। मूल सिंह अपनी पत्नी 'मीना' के साथ दिल्ली रहता है। परंतु गांव में आकर रामलीला में अभिनय करना चाहता है। तब उसकी पत्नी 'मीना' कहती है:–

"मेरी बात तो कोई सुनतुई नायं है। क्या जरूरत ही गाँव में लीला खेलने की। गाँव बारे कला देखगे, हुनर की तारीफ करेंगे पर जाति की तारीफ कौन करेंगें सोचा तक नांय।"7

निम्न जाति से होने के कारण जब 'मूल सिंह' रावण के रूप में मंच पर आता है तब लोग उसकी जाति के कारण जय–जय कार नहीं करते और उच्च जाति के लोग चिल्ला उठते हैं कि:–

"नहीं चमार को सिर नहीं झुकाया जा सकता।" अभिनय कर रहे राम ने सुग्रीव से कहा–"अरे ये तो नाटक है कौन से हम असल जिन्दगी में काऊ चमार भंगी को दुआ सलाम करने जा रहे है।"8

गांव में मूल सिंह के साथ अन्याय और शोषण का व्यवहार किया जाता है और गांव के लोग कहते हैं कि:–

"होइगो बड़ों कलाकार हम ससुरे चमरा कू जय शंकर की करवाते, अरे हमारे ही राम, हमारे ही हनुमान, और हमी मेघनाद, कुम्भकरण रामलीना–हमारी चमार भंगिग को काम?''9

'सूरजपाल चौहान' की कहानी 'जाति' में 'चेतन सिंह' निम्न वर्ग से संबंधित जूनियर ब्रांच मैनेजर के पद पर हैं। और पीसी शर्मा हैड क्लर्क है। हैड क्लर्क उच्च जाति से होने के कारण 'चेतन सिंह' जो निम्न वर्ग से है उससे घृणा से, नफरत से देखता है तथा उसका अपमान करते हुए कहता है कि:–

"कैसा जमाना आ गया, अब तो इस ऑफिस के ब्रांच मैनेजर चूहड़े–चमार भी बनने लगे।"10

'सूरजपाल' की दूसरी कहानी 'दो रंग' में भी जातिगत भेदभाव का वर्णन है। कहानी में ब्रांच मैनेजर दलित वर्ग से है। 'गंगा शरण' उच्च वर्ग से है पद में छोटा होने के बावजूद 'गंगा शरण' ब्रांच मैनेजर का सम्मान नहीं करता, क्योंकि वह निम्न वर्ग से है। ब्रांच मैनेजर चपरासी गंगा शरण द्वारा अपने तबादले की इच्छा जताने का कारण जानने के लिए उससे पूछता है कि:–

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

'गंगा, क्या बात है, तबीयत तो ठीक है तुम्हारी?" 'गंगासरण' कहता है- "क्यों मेरी तबीयत को क्या हुआ, ठीक हूँ।"

"मुझे आपके साथ काम नहीं करना, मेरा तबादला करवा दो।"

"क्यों?"

"बस कह दिया... मैं आपके साथ ड्यूटी नहीं करना चाहता।" ब्रांच मैनेजर 'गंगासरण के तबादले के बारे में जानने के लिए स्टेनो 'शीला सक्सेना' से पूछते है-"गंगा हमारे साथ काम नहीं करना चाहता, क्यों?"

स्टेनो 'शीला सक्सेना' कहती है-"सर, मुझसे भी कई बार कह चुका है कि वह यहाँ काम करना नहीं चाहता ।"

"पर क्यों?"

"सर, गंगा आपकी जाति का नाम लेकर बड़बड़ाता रहता है कि वह किसी चूहड़े-चमार की चाकरी क्यों करें.... वह तो सरकारी नौकर है और फिर ऊपर से पण्डित।"

'जाति' कहानी में भी हैड क्लर्क 'पीसी शर्मा' ब्रांच मैनेजर 'सुनील' पर तंज कसते हुए उसे तू कह कर बात करते हैं और उच्च वर्ग के अपने साथियों के साथ मिलकर निम्न वर्ग का अपमान करते हुए कहते हैं कि:-

"भाइयो, आज तो शुडू साहब तीनों चमचों के साथ खिचड़ी पकाने में लगे है।"

"अबे-खिचड़ी नहीं, मांस बोल मांस, ये जितने भी शुडू होते हैं मांस बहुत खाते है।"

"अपनी बहन बेटियों के शादी-विवाहों में ये सूअर के मांस की दावत करते हैं और देखते ही चट कर जाते है।"11

मध्यवर्गीय दलित नारी का चित्रण नाम मात्र हुआ है। अतः संक्षिप्त में ही इसका वर्णन किया गया है। मध्यवर्ग की आकांक्षा करती दलित नारी को सांकेतिक रूप से चित्रित किया गया है। भारतीय समाज का एक बहुत बड़ा हिस्सा 'दलित' वर्ग है इस वर्ग की पहचान साकार करने वाले साहित्य को ही दलित साहित्य कहा जा सकता है। दलित शब्द शोषित, पीड़ित समाज और समाज के सबसे निचले स्तर के उपेक्षित जन-समूह का विशेष है, जो अपने अर्थ में उसकी सम्पूर्ण पहचान समाहित किये हुए है। दलित साहित्य की मान्यता लगभग सातवें दशक के आस-पास प्राप्त हुई है, जब महाराष्ट्र में ज्योतिबाफूले, डॉ. अम्बेडकर के प्रभाव में उठे व्यापक सामाजिक आन्दोलन से दलित साहित्य भी एक सास्कृतिक आन्दोलन के रूप में उभरा।

दलित स्त्री साहित्यकारों की संख्या कम होने के कारण शिक्षित और स्वावलम्बी स्त्रियों को छोड़कर शेष की स्थिति आज भी पिछड़ेपन की शिकार है। समाज में वर्णव्यवस्था, जातिव्यवस्था के समान ही नारी की भी दलित स्थिति है यह बात बिल्कुल सत्य है। जिस तरह ये समाज में स्त्री के प्रति मनुवादी अवधारणा स्त्री को पुरूषों से हमेशा छोटा या निम्न बनाये रखने की धारणा है। इस व्यवस्था में शोषित स्त्री शुरू से लेकर वर्तमान तक धर्म, कर्म, पाप और पुण्य के नाम पर लोक व्यवहार के गढ़े आधार पर अत्याचार अनाचार और दुराचार सहकर भी इस व्यवस्था को धारण करते हुए आई है, जिसमे शिक्षा तथा आर्थिक सामाजिक स्वावलंबन ने वंचित नारी इस शोषण का डरकर मुकाबला भी नहीं कर पाती है'।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

आज हम जिस नए भारतीय मध्यवर्गीय नारी की बात कर रहे हैं, और जिस पर पिछले दो दशकों से सारी दुनिया की निगाहें टिकी हुई हैं, कार से लेकर कपड़ों, घड़ी, भाराब से लेकर सौन्दर्य प्रसाधनों और विदेशी कंपनियाँ जिसकी खिदमत में हर रोज नए ब्रांड, नए प्रोडक्ट और नए विज्ञापनों के साथ बाजार में उतर रही हैं, जरा उसके चरित्र और चेहरे को तो पहचान लें।

'सुशील टाकभोरे' की कहानी 'संघर्ष' में 'शंकर' चौदह साल का लड़का है! वह शरारती है, इस कारण लोग उसे डांटते हुए जातिसूचक शब्दों का प्रयोग करके उसे अपमानित करते हुए उस पर अत्याचार करते, मार-पिटाई करते थे 'शंकर' को रोता देख उसके पिता दुःखी मन से कहते हैं'' –

"बच्चा है... बच्चे धूम करते ही है। मगर लोगों को हमारा बच्चा ही बुरा लगता है। न जाने लोग हमारे पीछे ही क्यों पड़े रहते है? जहाँ देखो, जात-पात की बात करके हमें नीचा दिखाते रहते हैं। जैसे हमारी कोई इज्जत ही नहीं....?"12

समाज में आदर सम्मान जाति के आधार पर ही मिलता है। ऊँची जाति के लोगों को पूरा सम्मान मिलने का अधिकार है! निम्न जाति को यह अधिकार नहीं है। यह धारणा आज भी समाज में व्याप्त है''

"भारत में कोई ब्राह्मण, जो दलितों को अछूत मानता है, किसी दलित से हाथ नहीं मिलायेगा। कोई दलित अपने गुणों या उपलब्धियों के कारण निचली श्रेणी से ऊपर की श्रेणी में आ जाये और दलितों को अछूत मानने वाला ब्राह्मण उन गुणों और उपलब्धियों से रहित हो, तो वह उस दलित को नीची निगाह से ही देखेगा। यानी भारत में एक अशिक्षित और निर्धन ब्राह्मण का भी मानवाधिकार एक सुशिक्षित और धनी दलित के मानवाधिकार से अधिक है और यहाँ की जाति-व्यवस्था में दलितों के न्यूनतम मानवाधिकार के लिए भी कोई जगह नहीं है। निश्चय ही ऐसी व्यवस्था वाले समाज को सभ्य और सम्यक् समाज नहीं कहा जा सकता।"13

एस आर हरनोट की कहानी 'स्वर्ण देवता दलित देवता' में कहानी का पात्र अपने पिता के कहने पर 'लीलाधर शर्मा' के घर देवता आने के कारण भेज दिया गया, ताकि वहां पर वह देवता की सेवा कर सके। परंतु वहां पर उसके साथ अस्पृश्यता का व्यवहार किया गया। कहानी का पात्र रात को सर्दी बढ़ जाने के कारण पुजारी पर डाली गई दोनों में से एक रजाई खींच लेता है तो पुजारी उस पर चिल्ला कर कहता है कि उसने मेरी रजाई को छूकर अपवित्र कर दिया है और उसे गालियां देकर अपमानित करता है देवता का एक पंच पंड़ित 'नारायणू' थप्पड़ मारने के लिए आगे आता है तो वह उसे धक्का देकर गिरा देता है और विरोध करते हुए कहता है-''14

"पंडत! जितनी गालियां तुमने मेरे को दी, वह तो मैंने सहन कर ली। लेकिन मेरी एक बात का जवाब तू दे दे। तू ही क्यों, देवता के साथ जो ये पुजारी और पंच आए हैं, इनसे भी मैं पूछता हूँ कि क्या ठंड बामणों और कनैतों को ही लगती है या कि कशैली-चमारों को भी? खुद तो तुम दो-दो रजाइयां लेकर खर्राटे मारने लग गए और हम लोगों को बैठने के लिए पूरा पराल भी नहीं। हमारे में भी ऐसा ही दिल है, ऐसे प्राण है जैसे तुम लोगों में है। हमारे पुजारी और पंचों को तो शर्म है नहीं, लेकिन पंड़ित, तेरे यहां तो बड़ा कारज है। तन-तन देवताओं की जातरा है। तेरे को तो समझनी चाहिए थी

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

कि देवता के साथ बाहर की बिरादरी के भी लोग हैं। इस सर्दी में उन्हें भी तो रात काटनी है।"15

समाज की जाति व्यवस्था में अस्पृश्यता एक घिनौना रूप है। निम्न जाति के लोग उच्च जाति के लोगों की किसी वस्तु को छू ले तो वह अपवित्र हो जाते हैं, परंतु जब हर समय उन पर अत्याचार करते हैं, तब वे अपवित्र नहीं होते हैं?16 'सूरजपाल चौहान' की कहानी 'मंगल पांडे का लोटा' में 'मंगल पांडे' के लोटे को 'मातादीन' जो निम्न जाति से संबंध रखता है के द्वारा स्पर्श कर देने पर वह आक्रोश में आ जाता है। 'मातादीन' इस भेदभाव का विरोध करते हुए कहता है–

"पण्डत, तेरी पण्डताई उस समय कहाँ चली जाती है जब तू और दूसरे ब्राह्मण सिपाही गाय और सूअर की चर्बी से बने कारतूसों को मुँह में डालकर उनकी परतें खोलकर बन्दूक में भरते हो।"16

'रतनकुमार सांभरिया की कहानी 'मुक्ति' में भी अस्पृश्यता के कारण हुए अन्याय का विरोध होता है। कहानी में गांव का महंत 'नानकराम' को मंदिर की मूर्ति छूने से मना कर देता है और कहता है कि उसके छूने से मूर्ति अपवित्र हो जाएगी। 'नानकराम' अपने प्रति अन्याय व अपमान को सहन नहीं कर पाया और भागते हुए गुस्से में महंत पर तलवार लहरा देता है–"तेरी तो...।" महंत और मौत! मौत और महंत !! महंत और मौत !!"17

निश्कर्श :

दलित स्त्री का भोशण सवर्ण समाज द्वारा तो होता ही है। उसके साथ-साथ उसका अपना समाज भी करता है। दलित पुरूश भूख, गरीबी, जातीय घृणा, बेरोजगारी आदि का क्रोध अपनी स्त्री पर अत्याचार करके उतारता है। भाराब के नशे में धुत्त होकर अपनी औरत को मारना ये दलित पुरूश समाज में आम बात है। "समाज के ये जागरूक लोग प्रशंसा के पात्र हैं, जिन्होंने यह सोचा और समाज को दिशा दी कि वह व्यवसाय क्यों न छोड़ दिया जाये जिसके कारण लोग हमें घृणा की नजर से देखते है? हमें तुच्छ समझते हैं। हम भी अपनी इस मजबूरी को रहने नहीं देंगे, समाज को पुरानी परम्परा से मुक्त कर, नयी परम्परा से जोड़ेंगे। हम नयी राह की खोज करेंगे। जिस पर चलकर हमारा जाति समुदाय सम्मान के साथ सिर उठाकर चल सकेगा। बेरोजगारी और गरीबी से हम मुक्त हो सकेंगें। इस तरह हमारी अगली पीढ़ियों का भविष्य सुरक्षित बन सकेगा। ऐसी नयी राह की खोज जागरूक लोगों ने कर ली।"18 वर्तमान में दलित वर्ग मैला ढ़ोने का कार्य नहीं करना चाहता। वह अपनी इस पुश्तैनी कार्य से निजाती पाना चाहता है। एस आर हरनोट की कहानी 'एम डॉट.कॉम' में गांव में रहने वाली महिला पात्र की भैंस मर जाती है। तब उसके घर में कोई नहीं होता है। वह अपने पड़ोस के दलित जाति के 'परसा' नामक व्यक्ति के घर जाती है और उसे अपने घर मरी हुई भैंस उठाने के लिए कहती है। कहा जा सकता है कि दलित वर्ग से जुड़ी कहानियों में जातीय भेदभाव का मार्मिक चित्रण हुआ है।

International Journal of Research in Economics and Social Sciences(IJRESS)
Available online at: http://euroasiapub.org
Vol. 12 Issue 07 July- 2022
ISSN: 2249-7382 | Impact Factor: 8.018|
(An open access scholarly, peer-reviewed, interdisciplinary, monthly, and fully refereed journal.)

संदर्भ ग्रंथ सूची

1 डॉ. रेमश कुन्तल मेघ, आधुनिकता बोध और आधुनिकीकरण, पृदृ 95
2 के. दामोदरन, भारतीय चिन्तन परम्परा, पृदृ 219
3 नवल किशोर, मानववाद और साहित्य, पृदृ 30
4 डॉ. राधाकृष्णन, आकेशनल स्पीच्स एण्ड राइटिंग, रिलिजियन एण्ड इट्स प्लेस इन ह्यूमन लाइफ, पृदृ 286
5 के. दामोदरन, भारतीय चिन्तन परम्परा, पृदृ 215
6 भारतीय दलित-साहित्य 'लेख': डॉदृ पुरूषोतम सत्यप्रेमी : शिखर की ओर 'श्री माता प्रसाद अभिनन्दन ग्रन्थ' : सम्प्रादक - डॉदृ एनदृ सिंह, पृदृ 305-306
8 श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृदृ 60
9 श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृदृ 58
10 श्योराज सिंह बेचैन, भरोसे की बहन, पृदृ 60
11 सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृदृ 84
12 सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृदृ 91
13 सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृदृ 86
14 सुशीला टाकभौरे, संघर्ष, पृदृ 8
15 रमेश उपाध्याय, संज्ञा उपाध्याय, उत्पीड़ितों का मानवाधिकार, पृदृ 12
16 एसदृ आरदृ हरनोट, जीनकाठी तथा अन्य कहानियाँ, पृदृ 70
17 सूरजपाल चौहान, नया ब्राह्मण, पृदृ 118
18 रत्न कुमार सांभरिया, खेत तथा अन्य कहानियाँ, पृदृ 66